श्री नरसिंह सरस्वती मंत्र

ॐकार प्रणव परब्रह्म लेके हाथ में अनंत कोटी ब्रम्हांड
उसमें धृव का लगा है साचा जैसे हो खडा हुआ दंड
सूर्य तपन अगन का गोला सब कहे मार्तंड
बांध के डोर ग्रह नक्षत्रों की खेले भाग दौड
सुंदर धरत्री माई को संभाले यही सबसे भारी गौड
सप्तद्विप को फेरा लगाके नवखंड को करे पार
आ पहुंचे गिरनार अनुसूया नंदन अत्री का सार
हुए तेज का पुंज निरंजन जैसे दत्तावतार
लिला से झाडे माया को चमत्कार करे बारंबार
त्रिमुर्ती बाटे सुख भक्त को देवे परमानंद
खोलकर ब्रम्ह का ताला कोठी को करे सच्चितानंद
दुसरा तारा कहे श्रीपाद श्रीवल्लभ प्रकटे कुरवपूर
दिया जलाके जीवन में करावे माया को चूर
चमकीला तारा तिसरा कहे नरसिंह भान
संवारे जीवन भक्तोंका सुंदर करे जान
तप करके कृष्णा तीरी अवलिया होवे महान
जादु की पोटली खोलके खुष करे जहान
ज्ञान रुपी सागर में डुबाके भाव रुपी घागर
फैलावे भक्तों में चिटकावे भक्ति रुपी जागर
पवन करे संचारा फर फर फर
झरने से पानी झरे झर झर झर
आकाश से वर्षा गिरे सर सर सर
वैसे नरसोबा भरे ज्ञान भंडार भर भर भर
प्रकटे करंजनगरी अंबा माधव के घर
तप करने पहुंचे कृष्णा पंचगंगा संगम पर

औदुंबर की छाया में मांडे अपना ठान
चौसठ जोगीनी साथ देवे सुंदर करे जान
खुष करके नरसिंह जी को लेके भक्ति की आन
दर्शन देके त्रिमुर्ती गावे भाव रुपी गान
ध्यान करने से ही फुलावे हर एक रोम
जागृत हुवे कुंडलीनी सारा जगत करे ॐ
काया रुपी मिट्टी में उगावे भाव रुमी कोंब
भक्तिरुपी जल से पेड को करे डोंब
करके करीष्मा मिट्टी से निकाले सोना
बंजर को उपजावे ऐसा करे टोना
खोले भाग्य किवाड घुमाके जादु की दंडी
भगत की रक्षा करे जैसे हो माता चंडी
कमंडलू से अमृत पिलाके लौटा दे स्वास्थ को
रोगों को नाश करके अचंबित करे सबको
ताहज्जुब है ताहज्जुब है ताहज्जुब है नरसिंह की लिला
विस्मय करे मन को तुही शिव भोला
दर्शन देके नरसिंह भान फैलावे सुख की छाया
गम के चुंगल से छुडावे भगत की मन काया
लेके मुठ्ठी में चने ग्यारह प्रदक्षिणा करावे
स्मरण करके नरसिंह पादुका मन ही मन भावे
इच्छित कामना बोलके सिर झुकाके नमन होवे
गजर करके नरसोबाका चने कृष्णा में बहावे
खिलौना होके जीवमाया में डुबावे
चाबी देके स्वामी भगत की झुलावे
शेष पर बैठी धरत्री जिसपे सजावे नव खंड
माथे पे सजावे बिंदी साक्ष दे अखंड

ज्ञान की गुफा खोले खालके नरसिंह जी बाटे
ज्ञान मंदीर झुले वही अज्ञान को काटे
नरसिंहभान नाम अनेकन मात तुम्हारे
मुढी भक्तों के संकट झट से तारे
उल्टा पुल्टा है जगत का संसार
खेल के ऊसमें लगावे बेडा पार
बाद में नरसिंह जी आए क्षेत्र गाणगापूरी
चमत्कार करके संजिवन करे माया नगरी
जीवन है लोटा लोटे में भावरुपी जल
जल में आम्रपल्लव जीसपे गुरुरुपी श्रीफल
दर्शन देके नरसिंह भान साधे जो होवे गहन
साध्य कराके इच्छा को भक्त को करे सधन
जय हो नरसिंहभान जय हो नरसिंहभान जय हो नरसिंहभान
ऐसे करके जयजयकार दुर करे धुंधुकार
विश्व हे रथ रथ हो सूर्य चंद्र रुपी होवे चक्र
निरंतर घुमाके नरसिंहभान ना राखे फक्र
स्वामी साई की लिला जैसे दुध में मख्खन
भावस्य खिलावे सार के भक्ति मई ढक्कन
ऐसे महिमा गुरुमाई नरसिंह सरस्वती की
पूजा करे दर्शन लेके कृष्णा माई की
ॐ स्वामी ॐ स्वामी ॐ स्वामी
जय हो तेरी लिला जैसे मटके में पानी
संसार में तारे इस अनाथ को बनके चक्रपाणी
ऐसे नरसिंह स्वामी भगत के पिछे रहे निरंतर
जीवन में सुख समृद्धी फुलाकर न देवे अंतर
ॐ स्वामी ॐ स्वामी ॐ स्वामी
हरी ॐ तत्सत